रक्षाबंधन का भावनात्मक एवं आध्यात्मिक मर्म समझ उसे मनाएं

भारत देश में वर्ष दौरान कई धार्मिक, सामाजिक और राष्ट्रीय त्यौहार मनाये जाते हैं। इसमें श्रावण मास की पूर्णिमा के दिन रक्षाबंधन का त्यौहार मनाया जाता है। रक्षाबंधन हमारी सांस्कृतिक विरासत का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस तौहार को 'बलेव' नाम से भी जाना जाता है। रक्षाबंधन आमतौर पर भाई-बहन के पवित्र रिश्ते का त्योहार माना जाता है। इस दिन बहन भाई को तिलक करती है, राखी बांधती है और मुख मीठा कराती है। इस दिन ब्राह्मण अपनी जनोंउ बदलते है। इस दिन नारियल से समुद्र की पूजा की जाती हैं। इसीलिए उसे नारियली पूनम भी कहा जाता है। भाई-बहन के बीच के पवित्र संबंधों को मजबूत रखने के लिए यह त्यौहार मनाया जाता है। भाई के जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए बहन के स्नेह और शुभेच्छा की अभिव्यक्ति का पर्व है। बहन की हर प्रकार से सुरक्षा के लिए भाई की कटिबद्धता की अभिव्यक्ति का पर्व है।

मनुष्य को जन्म से ही कई प्रकार का डर वा भय रहता है और जहाँ भय है, वहाँ सुरक्षा का प्रश्न उठता है। हम कई तरह से अपनी रक्षा करने की कोशिश करते हैं लेकिन इन सब में अंतरमन के आशीर्वाद का, स्नेह संपन्न शुभ भावना का एवं परमात्मा की कृपा दृष्टि का रक्षण, हम सब आत्माओं के लिए, सबसे बड़ा सुरक्षा कवच है। हमारे शास्त्रों में एवं इतिहास में किसी प्रियजन को इस तरह की भावनात्मक सुरक्षा देने के कई उदाहरण हैं। ऐसे कई द्रष्टांत हैं जब माताएं अपने बच्चों को राखी बांधती हैं, पत्नियां अपने पति को, बहनें अपने भाइयों को राखी बांधती है। रक्षा की इस भावना को अभिमन्यु प्रति कुंती ने, युद्ध के मैदान में जाने से पहले, राखी बांधकर व्यक्त किया था। जब देवाधिदेव इंद्र राक्षसों से हार गए, तो इंद्राणी ने इंद्रा को राखी बांध कर सुरक्षित कीया, ताकि इंद्र को जीत हासिल हो। मेवाड़ की महारानी कर्मावती ने हुमायूँ को भाई के रूप में रक्षा भेजी और युद्ध को समाप्त कर दिया।

खासकर हिंदू समाज में रक्षाबंधन के दिन बहनें भाई की कलाई पर राखी बांधती हैं और हर तरह की सुरक्षा की अपेक्षा रखती हैं। किसी को आश्चर्य हो सकता है कि क्या राखी बांधने से वास्तव में किसी की रक्षा हो सकती है? यहां महत्व सिर्फ राखी का नहीं है, बल्कि राखी बांधते समय बहन ने दिए आंतरिक मन के आशीर्वाद, शुभ भावनाओं और शुभकामनाओं का है। इसलिए ऐसी भव्य भावना का उत्सव केवल एक निर्जीव प्रसंग नहीं होना चाहिए। भाई के मन राखी बांधना मतलब व्यवहार लेन-देन की रस्म पूरी करना, बहन को अपनी शक्ति के अनुसार कुछ देना| भाई से कुछ प्राप्त करने का बहन के अधिकार को पूरा करना गौण है । पैसा या कोई चीज दिया इसका कोई विशेष महत्व नहीं है, लेकिन भाई-बहन के बीच स्नेह और अच्छी भावनाओं का बढ़ना महत्वपूर्ण है।

हमें अपने त्योहारों के पीछे सांस्कृतिक , भावनात्मक और आध्यात्मिक रहस्यों को जानने का प्रयास करना चाहिए।

रक्षाबंधन वास्तव में दृष्टि और वृत्ति की पवित्रता निभाने का उत्सव है, खास कर के महिलाओं को विकृत दृष्टि से नहीं लेकिन पवित्र दृष्टि से देखना| हमने इस पावन पर्व को भाई-बहनों तक ही सीमित कर दिया है। खासकर आज जब दुनिया में महिलाओ की ओर कुदृष्टि, छेडखानी, बलात्कार और शोषण के किस्से बढ़ रहें है तब इस त्यौहार का वैश्विक स्तर पर महत्त्व बढ़ जाता है|

जब बहन भाई को राखी बांधती है, तो वह उसके माथे पर टिका लगाती है। यह प्रणाली में दृष्टि परिवर्तन की भावना समाविष्ट है। टिका आत्मा की स्मृति दिलाता है। आत्मा की विस्मृति और शारीरिक दृष्टि के कारण आज व्यक्ति की दृष्टि और वृत्ति विकृत हो गई है। हम समाज में इसके नकारात्मक परिणाम भी देख रहे हैं। इस विकृत दृष्टि और वृत्ति का समन केवल आध्यात्मिक स्मृति द्वारा हो सकता है। इसलिए उपरोक्त भाव को समझ कर बहन भाई को टिका करेगी तो सार्थक होगा| वास्तव में टिका ज्ञान के तीसरे नेत्र का पवित्र प्रतीक भी है। टिका कर के बहन भाई को त्रिनेत्री बनाती है। भगवान शंकर ने तीसरा नेत्र प्रकट कर के कामदेव को भस्म कर दिया था। बहन भी भाई का तीसरा नेत्र - बुद्धिलोचन खोलकर भाई को विकार-वासना भस्म करने का निर्देश करती है। टिका करने के बाद बहन राखी बांधती है। राखी सिर्फ एक धागा नहीं है, परन्तु स्नेह और संयम का महत्व समझाता एक पवित्र बंधन है| भाई के हाथ में राखी बांधकर बहन न केवल अपनी सुरक्षा चाहती है, बल्कि पूरे नारी समाज को अपने भाई से रक्षा मिले ऐसी भावना और अपेक्षा रखती है। साथ साथ भाई मानव आत्मा के शत्रु समान काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, स्वार्थ, लालसा, घृणा आदि विकारों से दूर रहे एसी भावना रखती हैं।

फिर बहन भाई को मिठाई खिलाती है और मुंह मीठा करती है। यह भी मार्मिक है। इसके पीछे भी यही रहस्य है कि भाई के मुंह से हमेशा मीठा और सत्य वचन निकले। भाई बहन को उपहार देता हैं। यह आध्यात्मिक रूप से मार्मिक है। उपहार देने के पीछे का उद्देश्य भी बहन हमेशा सुरक्षित और खुश रहे और सुखी रहे यह होना चाहिए।

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में रक्षाबंधन का पर्व बहुत ही महत्वपूर्ण है और इसे खास तरीके से मनाया जाता है। ईश्वर को समर्पित पवित्र बहनें समाज के सभी वर्गों के लोगों को सुरक्षा के इस पवित्र दिव्य बंधन को निस्वार्थ भाव से बांधती हैं और विषय विकारों से दूर रहने की शुभ भावना व्यक्त करती हैं। संस्था द्वारा विभिन्न संगठनों के संयुक्त उपक्रम में विशेष कार्यक्रम भी आयोजित किये जाते है। आप भी इन पवित्र बहनों से राखी जरूर बंधवाए और अपने जीवन को दिव्य बनाए।

---------- ॐ शांति ----------

ब्रह्माकुमार प्रफुलचंद्र

सान ड़िएगो : यु एस ए

(M) +91 98258 92710